International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 05-06-2020; Accepted: 20-06-2020; Published: 06-07-2020
Volume 2; Issue 3; 2020; Page No. 06-09

किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव

अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत

सारांश
वर्तमान दौर प्रतिस्पर्द्धा का है,जहाँ छात्रों के लिए अपनी योग्यतानुसार क्षमता और प्रभावशीलता विकसित करना उनके लिए एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। ऐसे में जीवन के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जाती है। मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती है इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। निःसन्देह शिक्षा ही मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल व्यवस्थित एवं प्रभावी विद्या है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते है। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है तो उसे उठने, बैठने चलने, फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती है। जब वह तीन चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना लिखना सिखाने लगते है इसी आयु में उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। इस अवस्था को शैशवावस्था कहते है। शिक्षा की दृष्टि से मानव जीवन में शैशवावस्था का अत्यन्त महत्व है। वेलेन्टाइन ने तो शैशवावस्था को सीखने का आदर्शकाल कहा है।[1] मनोवैज्ञानिक वाट्सन के अनुसार विकास की अन्य किसी अवस्था की तुलना में शैशवास्था में सीखने का क्षेत्र तथा तीव्रता अधिक व्यापक होता है।संवेगात्मक बुद्धि अपने व दूसरों क संवेगों को पहचानने, समझने व उनका प्रबंधन करने के साथ–साथ एक छात्र को उसकी शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए उसकी मदद करता है जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रतिफल होता है। इस पत्र का उद्देश्य उन कारकों की खोज करना था जो संवेगात्मक बुद्धि के विकास को प्रभावित करते है और जिनका छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि के बिना शैक्षिक सम्प्राप्ति की भविष्यवाणी करना सम्भव नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि संवेगात्मक बुद्धि छात्रों की स्कूल, कार्यस्थल एवं जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं क्षेत्रों में उनकी सहायता कर सकता हैं।

मुख्य शब्दः किशोरावस्था, संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक सम्प्राप्ति

प्रस्तावना
मानव जीवन के विकास की तीसरी सीढ़ी, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण सीढ़ी किशोरावस्था है।'' किशोरावस्था, बाल्यावस्था तथा युवावस्था के माध्य की अवस्था ही इसे संधिकाल (Transitional Period)भी कहते हैं। किशोरावस्था के सम्बन्ध में यह भी पररम्परागत विश्वास रहा है कि किशोरावस्था विकास की एक क्रान्तिक अवस्था है इस अवस्था के बालक को न बालक कह सकते है और न प्रौढ़ ही कह सकते हैं इस अवस्था में बालक के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन प्रौढ़वस्था की दिशा में होते हैं।

इस अवस्था में बालक की जो जीवन शैली बन जाती है वही जीवन शैली थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ जीवन पर्यन्त चलती है। बाल्यावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में बालकों में बदलाव दिखाई देता है। यह बदलाव मूलतः उनकी यौन परिवक्वता के कारण होता है सभी विकासात्मक अवस्थाओं में किशोरावस्था सर्वाधिक आनन्दमयी होती है। इसलिए इस अवस्था को सुनहरी अवस्था कहा जाता है।

किशोरावस्था
किशोरावस्था वह समय है जिसमें विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त वृद्धि एवं विकास की एक लम्बी यात्रा के दौरान एक बालक विशेष को किशोर कहना तब प्रारम्भ करना चाहिए जब यौन सम्बन्धी परिपक्वता की दृष्टि से उसमें संतान उत्पन्न करने की क्षमता आ जाये। दूसरी ओर जब वह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक रूप से पर्याप्त परिपक्वता अर्जित करके समुदाय तथा समाज विशेष में एक व्यस्क व्यक्ति की भूमिका निभाने में समर्थ हो जाये तब इसे किशोर के स्थान पर व्यस्क या प्रौढ़ कहना प्रारम्भ कर देना चाहिए। परन्तु जहां तक सामान्य जीवन और आम बोलचाल की बात है ।13 से 19 वर्ष के बालकों को सामान्यतः किशोर कहकर पुकरा जाता है और इस अवस्था को किशोरावस्था कहते हैं।

किशोरावस्था की परिभाषाएं
पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार इस अवस्था को '' टीन एज'' (Teen Age) भी कहा जाता है। जिसे विद्वानों ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

- **कुलहन के अनुसार–**किशोरावस्था बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का परिवर्तन काल ही मानव विकास में इस अवस्था का विशेष महत्व है। यह 13 से 19 वर्ष की आयु तक का काल है। इसलिए इसे टीन एज ;ज्समद ।हमद्ध भी कहा गया है।
- **किल्पैट्रिक के अनुसार–**किशोरावस्था वह अवस्था है जिसके द्वारा एकी विकासमान व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता तक पहुंचता है।
- किशोर युवां वर्तमान युग की ऊर्जा और भविष्य की आशा उपस्थित करता है।

[1] गुप्ता, डा0 एस0पी0, गुप्ता, डा0 अल्का (2012), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 108

- **स्टेनले हाल के अनुसार**–किशोरावस्था प्रतिबल और खिंचाव तूफान और संघर्ष का समय होता है।

वास्तव में किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन और समस्यात्मक काल होता है। किशोर अपनी वयसंधि के ऐसे चौराहे पर खड़ा होता है जहां उसे बचपन तथा व्यस्क दोनों प्रकार की भूमिकाओं से उत्पन्न विरोधी अपेक्षाओं का शिकार होना पड़ता है। तथा अपनी आवश्यकताओं समस्याओं एवं महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के संदर्भ में आवश्यक मार्गदर्शन एवं परामर्श की आवश्यकता रहती है ।अतः किशोर एवं किशोरी को सभी प्रकार से ऐसी शिक्षा तथा समायोजन सम्बन्धी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिनसे उनका अधिक से अधिक सर्वांगीण विकास हो सके।

किशोर ही भविष्य की आशा तथा वर्तमान की शक्ति है। इंग्लैण्ड की शिक्षा पर प्रकाशित हैडो रिपोर्ट[1] के एक उद्धरण से स्पष्ट होता है कि यदि इस ज्वार के बाढ़ को समय पर ही उपयोग कर लिया जाये एवं इसकी शक्ति और धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है। किशोरावस्था मानव विकास का वह काल है जिसमें 13–14 वर्ष से लेकर 21 वर्ष तक होने वाले परिवर्तन प्रकट होते हैं। परिपक्वता आने लगती है। यह परिपक्वता का थोड़ा सा समय है परन्तु यौन परिपक्वता हेतु यह काफी समय तक चलता है। किशोर–किशोरियां शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, नैतिक रूप से प्रौढ़ो से भिन्न होते हैं।

किशोरावस्था में संवेगात्मक सन्तुलन बिगड़ जाता है। इस समय संवेगों में आँधी और तूफ़ान की सी गति और प्रचण्डता होती है। इसलिए किशोरावस्था को प्रायः तूफान और तनाव का समय माना जाता है। जीवन की किसी अन्य अवस्था में संवेगात्मक शक्ति का प्रवाह इतना भीषण नहीं होता जितना कि इस अवस्था में पाया जाता है। एक किशोर के लिए अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखना बहुत कठिन होता है। यौनि–ग्रन्थियों के तेजी से क्रियान्वित होने और शारीरिक शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हो जाने के कारण बाल्यावस्था में पाई जाने वाली संवेगात्मक स्थिरता और शान्ति भंग हो जाती है। वे संवेगात्मक दृष्टिकोण से बहुत चंचल और अस्थिर हो जाते हैं। शिशु की तरह किशोर क्षण में रूष्ट और क्षण में तुष्ट दिखाई देते हैं। जरा–जरा सी बात पर बिगड़ पड़ना, उत्तेजित हो जाना, निराश होकर आत्महत्या पर उतारू हो जाना, प्रथम दृष्टि में एक–दूसरे को दिल दे बैठना आदि किशोरों के संवेगात्मक व्यवहार की सामान्य विशेषताएँ हैं।

इन सब बातों को देखते हुए इस अवस्था में संवेगों को ठीक प्रकार प्रशिक्षित करने और संवेगात्मक शक्तियों को अनुकूल दिशा में प्रवाहित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। हैडो रिपोर्ट ;ंकवू त्मचवतजद्ध ने इस आवश्यकता को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न किया है– ''युवाओं की धमनियों में 11 से 12 वर्ष की अवस्था से ही एक ज्वार उमड़ना प्रारम्भ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यह ज्वार बाढ़ का रूप धारण कर सकता है परन्तु अगर इस प्रचण्ड जल प्रवाह को पूरी शक्ति के साथ अनुकूल दिशा में प्रवाहित किया जाए तो यह अपने निश्चित लक्ष्य पर पहुँच सकता है।** (Ross, 1951, p. 153)

संवेगात्मक बुद्धि

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में विगत कुछ समय से विद्वानों के द्वारा ''संवेगात्मक बुद्धि'' नामक एक नूतन सम्प्रत्यय की प्रचुरता के साथ चर्चा की जा रही है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा किसी घटना के प्रति जीव की प्रतिक्रियाओं को संवेग कहा जाता है। प्रेम, खुशी, स्नेह, प्यार, आश्चर्य, मित्रता जैसे सकारात्मक संवेग व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से वांछनीय क्रियायें करने के लिए प्रेरित करते हैं जबकि क्रोध, भय, दुख, घृणा, कामवासना जैसे नकारात्मक संवेग व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से अवांछनीय प्रतिक्रयायें करने की ओर अग्रसर करते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरे के संवेगों को जानने समझने तथा उसका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। यह बुद्धि सामान्य बुद्धि (I.Q.) से स्वतंत्र है। अर्थात् संवेगात्मक बुद्धि स्वयं के संवेगों को, दूसरे के संवेगों को तथा समूह के संवेगों को चिन्हित करना, मूल्यांकन करना तथा नियन्त्रित करने की योग्यता है।

संवेगात्मक बुद्धि के अनेकों मॉडल एवं परिभाषाओं में से Ability तथा Trait Modeldh वृहद रूप से स्वीकृति प्राप्त है। ।इपसपजल म्का मापन अधिकांश रूप से निष्पादन परीक्षणों के द्वारा किया जाता है तथा उसका घनिष्ठ सम्बन्ध परम्परागत बुद्धि से है। (बुद्धि जिसमें मुख्य रूप से संज्ञानात्मक शक्तियाँ शामिल है) जबकि Trait EIdk मापन सामान्य रूप से स्वयं की बनायी गई प्रश्नावली का उपयोग करके किया जाता है तथा इसका घनिष्ठ सम्बन्ध व्यक्ति के व्यक्तित्व से होता है।

संवेगात्मक बुद्धि नामक पद का प्रतिपादन सर्वप्रथम मेयर एवं सेलोवे (1997)[2] ने किया। उनके अनुसार संवेगात्मक बुद्धि में तर्क निहित है परन्तु यह संज्ञानात्मक बुद्धि नहीं कही जा सकती है। सेलोवे तथा मेयर (1997) के अनुसार, ''चिन्तन को सुगम बनाने हेतु संवेगों के प्रत्यक्षन, अवबोध, प्रबंधन व प्रयोग की योग्यता संवेगात्मक बुद्धि है।'' संवेगात्मक बुद्धि सामाजिक बुद्धि का एक सम्मुचय होता है, जिसमें स्वयं तथा अन्यों की भावनाओं और संवेगों को नियंत्रित करने, पृथक् करने और सूचना के अनुसार व्यक्ति के चिन्तन और क्रियाओं को निर्देशित करने की क्षमता निहित होती है। संवेगात्मक बुद्धि में संवेगों के प्रत्यक्षीकरण करने, संवेगों के प्रति पहुँच बनाने एवं उसे उत्पन्न करने की क्षमता शामिल होती है जिससे कि चिन्तन में सहायता हो सके, संवेग को समझा जा सके तथा उसे चिन्तनशील तरीके से नियमित किया जा सके।

बार–ऑन (2005)[3] का विचार है कि संवेगात्मक–सामाजिक बुद्धि स्वयं को समझने, अपने सबल एवं दुर्बल पक्ष को जानने तथा अपनी भावनाओं व चिन्तन को गैर–हानिप्रद रूप में व्यक्त करने की अन्तः वैयक्तिक योग्यता पर आधारित है। अन्तर्वैयक्तिक स्तर पर संवेगात्मक व सामाजिक दृष्टि से बुद्धिमान होने में दूसरे के संवेगों, भावनाओं व आवश्यकताओं से परिचित होने तथा सहयोगात्मक, निर्माणकारी और परस्पर सन्तोषजनक सम्बन्ध स्थापित करने व उन्हें कायम रखने की योग्यता निहित है।

डेनियल गोलमैन (1998), *''यह अपने एवं दूसरों के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करने एवं अपने तथा अपने सम्बन्धों में संवेग को प्रतिबन्धित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा उन क्षमताओं का वर्णन होता है जो शैक्षिक बुद्धि या बुद्धिलब्धि द्वारा मापे जाने वाले पूर्णतः संज्ञानात्मक क्षमताओं से भिन्न परन्तु उसके पूरक होते है।''*

[1] हैडो कमेटी रिपोर्ट उद्धरत पाठक, पी0डी0 (2008). शिक्षा मनोविज्ञान, विकास की अवस्थाएँ, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृ0 73

[2] मेयर, जे0डी0 एवं सैलोवे, पी0 (1997). व्हाट इज इमोशनल इंटेलिजेन्स? साइटेड इन पी0 सैलोवे ऐण्ड डी0 स्लूएटर, इमोशनल डेवलपमेन्ट ऐण्ड इमोशनल इंटेलिजेन्स : इम्पिकेशन्स फॉर एजूकेटर। न्यूयार्क : बेसिक बुक्स।

[3] बार–ऑन, आर0 (2000). इमोशनल ऐण्ड सोशल इंटेलिजेन्स : इनसाइट्स फ्राम द इमोशनल क्योशेन्ट इन्वेन्ट्री। आर0 बार–ऑन एवं जे0डी0ए0 पार्कर (सम्पा0). हैण्डबुक ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस। सेनफ्रांसिस्को : जेसी ब्रास।

संवेगात्मक बुद्धि की योग्यता प्रारूप

संवेगात्मक बुद्धि की इस श्रेणी की परिभाषाएँ कुछ विशेषताओं के के माध्यम से संवेगात्मक बुद्धि की विवेचना करती है। सैलोवे तथा मेयर की परिभाषाएँ योग्यता पर ही आधारित है– इन्होंने अपनी पुस्तक इमोनशनल डेवलेमेन्ट एण्ड इमोशनल बुद्धि (1997) में निम्न रूप में परिभाषित किया–

''संवेगात्मक बुद्धि को ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें संवेगों को तार्किक ढ़ग से प्रत्यक्षीकरण करना, उसे अपनी विचार प्रक्रिया में एकीकृत करना, उसे समझना तथा उसके प्रबन्धन से है।''

जॉन डी मेयर तथा पीटर सेलोवे (1990)[4] ने संवेगात्मक बुद्धि को निम्न प्रकार परिभाषित किया–''संवेगात्मक बुद्धि एक योग्यता है जिसमें हम अपने स्वयं तथा अन्य व्यक्ति*यों की भावनाओं एवं संवेगों का अनुवीक्षण करते है। इन सूचनाओं के आधार पर उनमें अन्तर करते है और अपने कार्यों एवं चिन्तन को निर्देशित करते है।''*

परिभाषा पर विचार करे तो स्पष्ट होता है कि हम सभी में अपने संवेगों से निपटने हेतु अलग–अलग ढंग की क्षमता और योग्यता पायी जाती है और उसी के अनुरूप एक समूह में दूसरों की तुलना में किसी भी व्यक्ति विशेष की संवेगात्मक बुद्धि की दृष्टि से अधिक या कम बुद्धिमान माना जाता है।

एक व्यक्ति को उतना ही संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान माना जाता है जितना कि क्षमता और योग्यता वह निम्न रूपों में प्रदर्शित करता है–

- अपने स्वयं के संवेगों की सही जानकारी।
- दूसरों की शारीरिक भाषा, मुख, मुद्रा, बोलने के अन्दाज द्वारा संवेगों को पहचानना।
- दूसरों के संवेगों को पहचानकर अपनी विचार प्रक्रिया (जैसे–अपने संवेगों तथा भावनाओं का समस्या समाधान विश्लेषण करना, निर्णय लेना आदि) में शामिल करना।
- संवेगों की प्रकृति उसकी तीव्रता तथा परिणामों से अवगत रहना।
- संवेगों की अभिवृत्ति तथा उस पर नियन्त्रण कर सकना तथा उन्हें अपने स्वयं के तथा दूसरों के हित चिन्तन, आपसी मेल–जोल तथा भाईचारे हेतु प्रयोग में लाने की क्षमता।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्त्व

कुछ समय पूर्व तक यही धारणा सभी जगह व्याप्त थी कि व्यक्ति की सभी प्रकार की सफलताओं के पीछे पूरी तरह किसी ने किसी रूप में उसकी मानसिक योग्यताओं तथा क्षमताओं का ही हाथ रहता है और इसलिए सामान्य बुद्धि की मात्रा यानी आई क्यू ;ण्फण्द्ध को एक ऐसा आधार या पैमाना माना जाता था जिससे यह भविष्यवाणी की जा सके कि व्यक्ति विशेष किसी कार्य विशेष के सम्पादन में किस सीमा तक सफल होगा। परन्तु इस धारणा का वर्चस्व मनोविज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नवीनतम अनुसंधानों ने अब लगभग समाप्त सा ही कर दिया है। इन प्रयासों को विशेष बल संवेगात्मक बुद्धि नामक अवधारणा के जन्म लेने के कारण ही मिला है। विशेषकर अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डा0 डेनियल गोलमैन की बहुचर्चित पुस्तकों (Emotional Intelligence-Why it can matter more than I.Q. and Working with Emotional Intelligence) ने संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्त्व को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से जनमानस के समझ रखने का प्रयत्न किया है। संवेगात्मक बुद्धि के बारे में डेनियल गोलमैन द्वारा प्रतिपादित विचारों ने एक तरह से हमारे जीवन के विविध क्षेत्रों में संवेगात्मक बुद्धि की आवश्यकता एवं उपयोग को लेकर एक क्रांति सी मचा दी है। आज घर, विद्यालय, चिकित्सालय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मंच, परामर्श एवं निर्देशन सेवायें, औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान, प्रबन्धन क्षेत्र आदि कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहाँ काम काज की दुनिया में संवेगात्मक बुद्धि के महत्त्व एवं उपयोगिता को अंगीकृत नहीं किया गया हो।

किसी की संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य उसकी उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरे के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। किस में कितनी संवेगात्मक बुद्धि है उसके इस स्तर की माप के लिए जिस इकाई विशेष का प्रयोग करते हैं उसे संवेगात्मक लब्धि (Emotional Quotient) और संक्षेप में ईक्यू ;ण्फण्द्ध कहा जाता है। यह उसी प्रकार का पैमाना है जैसा आई क्यू ;ण्फण्द्ध के रूप में सामान्य बुद्धि स्तर की माप के लिए काम में लाया जाता है। संवेगात्मक बुद्धि का विकास व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों की दृष्टि से बहुत ही उपयोगिता रखता है इसलिए बालकों के दूसरे उपयुक्त विकास हेतु शुरू से ही काफी गम्भीर प्रयत्न किये जाने चाहिएं। उन्हें स्वयं अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने समझने तथा उनका उचित प्रबन्धन करने का ऐसा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि वे अन्तः सम्बन्धों को बनाये रख कर अपने और अपने वातावरण से ठीक प्रकार समायोजन करने में कुशल एवं प्रवीण सिद्ध हो सकें। समय समय पर उनके संवेगात्मक स्तर का मापन करते रहने की भी चेष्टा की जाती रहनी चाहिए। उचित मानकीय संवेगात्मक बुद्धि परीक्षणों जैसे मेयर इमोशनल इन्टैलीजैन्स स्केल, मंगल संवेगात्मक बुद्धि मापनी द्वारा इस प्रकार का मापन किया जा सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि.

शैक्षिक उपलब्धि एक ऐसा सम्प्रत्यय है जिसका तात्पर्य छात्रों द्वारा शैक्षिक क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त करने से होता है। शैक्षिक उपलब्धिको निष्पत्ति के नाम से भी जाना जाता है यह छात्रों के अकादमिक कार्य के विषय में कुछ विशिष्ट क्षेत्र में निपुणता/दक्षता या सफलता प्राप्त करने के स्तर को प्रदर्शित करता है। शैक्षणिक सफलता अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों द्वारा अर्जित उपलब्धि का परिणाम होता है। शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा में सीखने की योग्यता, सीखने की तत्परता और सीखने के अवसर जैसे कारकों की सहभागिता होती है। इस पर छात्र के पर्यावरण, उसकी पारिवारिक, पृष्ठभूमि, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं उनकी रूचियों और अभिरूचियों का भी प्रभाव पड़ता है। शैक्षणिक उपलब्धि पर जनसांख्यिकीय, सांस्कृतिक और पर्यावरण कारक भी प्रभाव डालते है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि की किसी भी बच्चे में आत्मविश्वास पैदा करने के साथ ही साथ उसके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह उसके समूह के बेहतर समायोजन में भी सहायक होता है। क्रो एण्ड क्रो (1969) ने शैक्षणिक उसकी उपलब्धि को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'सीखने के किसी क्षेत्र में एक शिक्षार्थी किस सीमा तक निर्देशों का लाभ उठा रहा है अर्थात् उपलब्धि उस सीमा तक परिलक्षित होती है जिस तरह कौशल और ज्ञान उसे प्रदान किया गया है।

निष्कर्ष

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य अपने स्वयं की भावनाओं को पहचानने, दूसरों को और स्वयं को अभिप्रेरित करने के लिए और हममें और हमारे संबंधों के माध्यम से हमारे संबंधों में अच्छी तरह से प्रबंधन करने की क्षमता से है। संवेगात्मक बुद्धि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारी सहायता कर सकती है। जब जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में दीर्घकालिक सफलता या सफलता की बात आती है, तो संवेगात्मक बुद्धि में उच्च

4 मंगल, डा0 एस0के0 (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, प्रेन्टिस हाल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृ0 110

होना शैक्षणिक योग्यताओं में उच्च होने से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

यह दावा किया जाता है कि जिन बच्चों की बुद्धि लब्धि अधिक होती है उनकी संवेगात्मक क्षमताओं को विकसित एवं उनमें सुधार ला सकते हैं। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान लोग अपने द्वारा किए गये हर कार्य में सफल होने की अधिक सम्भावना रखते हैं। विद्यालयों में बच्चों के संवेगात्मक और सामाजिक कौशल सिखाना बहुत महत्वपूर्ण हो गया है; ये न केवल उनके द्वारा अध्ययन किए जाने वाले वर्ष के दौरान, बल्कि उनके उन्हें वर्षों के दौरान भी शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते है जो आगे आने वाले है। इस प्रकार संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र के पास बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि की संभावना होगी या संवेगात्मक बुद्धि के माध्यम से शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार की सम्भावना में वृद्धि की जा सकती है।

आधुनिक युग में शिक्षा का दायरा बढ़ता जा रहा है और विद्यार्थियों में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए प्रतियोगिताएं बढ़ती जा रही है। विद्यालयी जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए छात्रों को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना मुश्किल लगता है। बेहतर प्रदर्शन के लिए भावनाओं का प्रबंधन अति आवश्यक है, भले ही वे अपनी इच्छा के अनुसार प्रतिस्पर्द्धा में उतरे, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बिल्कुल नहीं है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सफलता का अनुमान संवेगात्मक उपायों से लगाया जा सकता है। इसके लिए माता–पिता, शिक्षक, अभिभावक और परामर्शदाता उन्हें कई तरह से प्रभावित कर सकते हैं। छात्रों की बुद्धि उनके सीखने की दक्षता में सहायता कर सकती है और उन्हें कौशलयुक्त बनाने के साथ–साथ उनको उपलब्धि भी दिला सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी. (2007). ऍसन्सियल ऑफ एजूकेशन साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली।
2. अग्रवाल, जे.सी. (2006). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली।
3. अस्थाना, विपिन (2001). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।कौल, लोकेश (2006). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली।
4. गुप्ता, एस.पी. व बाजपेई पी.के. (2008). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, मार्डन पब्लिकेशन, जालंधर।
5. गुप्ता, डा0 एस0पी0, गुप्ता, डा0 अल्का (2012), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 108
6. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अल्का (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पृ0 149
7. पाठक, पी0डी0 (2008). शिक्षा मनोविज्ञान, विकास की अवस्थाएँ, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृ0 73
8. पाठक, पी0डी0 (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
9. बार–ऑन, आर0 (2000). इमोशनल ऐण्ड सोशल इंटेलिजेन्स : इनसाइट्स फ्राम द इमोशनल क्योशेन्ट इन्वेन्ट्री। आर0 बार–ऑन एवं जे0डी0ए0 पार्कर (सम्पा0). हैण्डबुक ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस। सेनफ्रांसिस्को : जेसी ब्रास।
10. भटनागर, सुरेश (1996). शिक्षा मनोविज्ञान, ईगल बुक्स इंटरनेशनल, मेरठ।
11. भार्गव, महेश (2007). विशिष्ट बालक, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा–14।
12. मन (2007), शैक्षिक अधिगम के मनोसामाजिक आधार, श्रीमती मंजू मिश्रा, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, पृ0 161
13. मंगल, डा0 एस0के0 (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, प्रेन्टिस हाल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृ0 110
14. मेयर, जे0डी0 एवं सैलोवे, पी0 (1997). व्हाट इज इमोशनल इंटेलिजेन्स? साइटेड इन पी0 सैलोवे ऐण्ड डी0 स्लूएटर, इमोशनल डेवलपमेन्ट ऐण्ड इमोशनल इंटेलिजेन्स : इम्पिकेशन्स फॉर एजूकेटर। न्यूयार्क : बेसिक बुक्स।
15. शर्मा, आर.ए. (2008). शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।